BA 5th Semester Hindi Literature Notes (Paper 2)

Unit I: वीरगाथाकाल का राष्ट्रीय काव्य

भूमिका

हिंदी साहित्य का इतिहास विभिन्न युगों एवं धाराओं के आधार पर विभाजित किया गया है। उसमें वीरगाथाकाल को विशेष स्थान प्राप्त है। यह काल हिंदी साहित्य का प्रारंभिक काल माना जाता है, जो लगभग 11वीं शताब्दी से 14वीं शताब्दी तक माना जाता है। इस काल की प्रमुख विशेषता है – *वीर रस का उत्कट स्वरूप* और राष्ट्रीय चेतना का उद्भव।

यह समय भारत पर विदेशी आक्रमणों का था, जब मुस्लिम शासक भारत की सीमाओं में प्रविष्ट हो चुके थे। राजा-महाराजा अपने अस्तित्व की रक्षा में निरंतर संघर्षरत थे। इस संघर्ष का प्रतिबिंब साहित्य में स्वाभाविक रूप से दिखाई दिया। कवियों ने तत्कालीन राजनीतिक और सामाजिक परिस्थितियों को ध्यान में रखते हुए वीर योद्धाओं के शौर्य, पराक्रम, त्याग एवं युद्ध कौशल का गान किया। इसीलिए इस काल को "अधिकांशत: वीर रस प्रधान महाकाव्यों का युग" कहा गया।

राष्ट्रीय भावना उस युग में आज की तरह राजनीतिक "राष्ट्रवाद" के रूप में नहीं थी, बल्कि तत्कालीन भूभाग (जनपद, राज्य, क्षेत्र) की रक्षा और स्वाधीनता की प्रेरणा यही राष्ट्रीयता थी। इसीलिए इस काल के काव्य को प्राय: राष्ट्रीय काव्य कहा जाता है। वीरगाथाकालीन काव्य भारतीय जनमानस की स्वतंत्र चेतना का प्रारंभिक स्वर है।

वीरगाथाकाल की प्रमुख प्रवृत्तियाँ

- वीर रस का उत्कर्ष : मुख्य रूप से युद्ध, शौर्य, पराक्रम और बलिदान का वर्णन।

File Provided by GKPAD.COM

- राजनीतिक जीवन का चित्रण : तत्कालीन समाज में क्षत्रियों की प्रतिष्ठा थी और कवियों ने राजाओं एवं वीरों के पराक्रम का गान किया।
- राष्ट्रीय चेतना का उद्गार : राज्य और क्षेत्र की रक्षा को ही राष्ट्र रक्षा का रूप मानना।
- कथात्मक शैली : अधिकांश रचनाएँ लंबी कथात्मक शैली में पद्यबद्ध थीं।
- लोकप्रियता : ये काव्य प्राय: गायक भाट, चारण एवं जातीय परंपराओं द्वारा जन-जन तक पहुँचते थे।
- इतिहास और काव्य का मिश्रण : रचनाओं में ऐतिहासिक तथ्य और कल्पना का सुंदर संयोजन देखने को मिलता है।

उपयूनिट 1: चांदबरदाई और "पृथ्वीराज रासो"

चांदबरदाई का परिचय

चांदबरदाई वीरगाथाकाल के अतिप्रसिद्ध कवि माने जाते हैं। वे दिल्ली के राजा पृथ्वीराज चौहान (1178-1192 ई.) के राजकवि और निजी मित्र थे। "पृथ्वीराज रासो" उनका प्रसिद्ध ग्रंथ है, जो वीरगथात्मक राष्ट्रीय काव्य का सर्वोत्तम उदाहरण है।

- जन्मस्थान: राजस्थान (कुछ मतों के अनुसार लाहौर के निकट या पुखराज नगर)
- समकालीन: घोरी और चौहान संघर्ष का काल
- स्थान: पृथ्वीराज की सभा में विशेष आदर

पृथ्वीराज रासो का स्वरूप

"पृथ्वीराज रासो" आकार और स्वरूप में अत्यंत विशाल ग्रंथ है। इसमें पृथ्वीराज चौहान के जन्म से लेकर उनकी मृत्यु तक की कथाएँ कवितामय शैली में प्रस्तुत की गई हैं। किंतु मूल "रासो" छोटा था, बाद में इसमें कई परवर्ती कवियों ने सामग्री जोड़ी।

- भाषा: प्रारंभिक खड़ी बोली और ब्रज मिश्रित अपभ्रंशनुमा भाषा

File Provided by GKPAD.COM

- शैली: प्रबंध काव्य, वीर रस प्रधान
- छंद: दोहा, चौपाई, सवैया आदि
- विषयवस्तु: पृथ्वीराज चौहान का शौर्य, दिल्ली की राजगद्दी, घोरी से युद्ध, संयोगता एवं पृथ्वीराज-समय की कथा

राष्ट्रीयता का स्वर

"रासो" में तत्कालीन राष्ट्रीय चेतना स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।

- राजा पृथ्वीराज को भारत का सबसे बड़ा वीर दिखाया गया।
- उनकी पराजय और मृत्यु को राष्ट्रीय क्षति के रूप में चित्रित किया गया।
- कवि ने वीरता, बलिदान, शौर्य और स्वतंत्रता को उत्कर्ष पर पहुँचाया।

"रेवा तक समय के अंश" (चढ़ती राज पृथ्वीराज)

प्रश्न में उल्लिखित अंश *चढ़ती राज पृथ्वीराज* पृथ्वीराज चौहान के उत्कर्ष काल और साम्राज्य विस्तार का वर्णन करता है।

- इसमें उनके राज्य के गौरव का दृश्य प्रस्तुत किया गया है।
- कवि ने राष्ट्रीय चेतना को प्रकट करते हुए दिखाया कि भारतीय वीर शत्रुओं से मुकाबला कर रहे हैं।
- यह अंश केवल ऐतिहासिक तथ्य नहीं, बल्कि मनोबल और सामूहिक ऊर्जा जगाने वाला साहित्य है।

पृथ्वीराज-घोरी प्रसंग

सबसे लोकप्रिय कथा है – घोरी के 17 आक्रमणों का सामना करना और 18वें में पराजित होना।

- कैद के बाद "अंधे पृथ्वीराज" कथा प्रसिद्ध है, जिसमें चांदबरदाई ने "शब्द भेदी बाण" से घोरी का वध करवाया।

File Provided by GKPAD.COM

- यद्यपि इसके ऐतिहासिक प्रमाण संदिग्ध हैं, परंतु यह कथा राष्ट्रीयता और वीरता का प्रतीक बन गई।

उपयूनिट 2: जगनिक और "आल्हखंड"

जगनिक का परिचय

जगनिक बुंदेलखंड क्षेत्र के प्रसिद्ध लोककवि थे। माना जाता है कि वे महोबा के चंदेला दरबार से जुड़े थे। वे अल्हा-ऊदल जैसे वीरों की गाथाओं का गान करते थे। "आल्हखंड" उनकी प्रमुख रचना है।

आल्हखंड का स्वरूप

"आल्हखंड" वीरगाथाकालीन राष्ट्रीय काव्य का एक और महत्वपूर्ण उदाहरण है। इसमें महोबा के वीर भाइयों – आल्हा और ऊदल – के युद्धकौशल और बलिदान का चित्रण मिलता है।

- भाषा: बुंदेली और ब्रज का मिश्रण
- शैली: लोककथात्मक, गीतात्मक
- रस: वीर रस प्रधान, साथ ही करुण और श्रृंगार का मिश्रण
- रूप: गायक-भाट इसे गाते थे, लोक में आज भी "आल्हा" गान परंपरा जीवित है।

राष्ट्रीय चेतना का स्वर

- आल्हा-ऊदल को देश, धर्म और राज्य की रक्षा का प्रणेता माना गया।
- उन्होंने पराक्रम से प्रतिष्ठा पाई और विदेशी व घातक शक्तियों का प्रतिरोध किया।
- यद्यपि उनका संघर्ष स्थानीय था, फिर भी उसमें व्यापक राष्ट्रीयता की झलक है।

प्रश्न में उल्लिखित अंश

दो खंडों का उल्लेख है—

File Provided by GKPAD.COM

1. प्रथम पाँच सुमिरन अंश (गया न किन्हीं जिन कलजउग माँ — भयानक मार)
    - इसमें वीरों की आरंभिक चिंतन-प्रार्थना और युद्धभूमि में उनके संकल्प का चित्रण है।
2. अंतिम पाँच अंश (भोर भुरहरे — लडिहैं खूब वीर मलखान)
    - इसमें युद्ध का उग्र स्वरूप और वीरता की पराकाष्ठा दिखाई देती है। मलखान जैसे योद्धाओं के पराक्रम का स्मरण किया गया है।

आल्हा परंपरा की विशेषता

- सीधे लोक के हृदय से संपृक्त।
- अत्यधिक ऊर्जावान और मार्मिक गीत।
- जनसमूह में राष्ट्रीयता और आत्मगौरव उत्पन्न करने का सामर्थ्य।
- युद्ध में बलिदान की प्रेरणा देने वाला।

वीरगाथाकाल के राष्ट्रीय काव्य की विशेषता

चांदबरदाई और जगनिक दोनों कवियों की रचनाओं में हमें यह दिखता है कि –

- तत्कालीन राजाओं और वीरों के शौर्य को राष्ट्रीयता का प्रतीक बनाया गया।
- काव्य केवल साहित्य नहीं, बल्कि *राष्ट्रीय स्वाभिमान का प्रेरक माध्यम* था।
- पृथ्वीराज चौहान और आल्हा-ऊदल केवल राजा-वीर नहीं, बल्कि राष्ट्रीय प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किए गए।

निष्कर्ष

वीरगाथाकालीन राष्ट्रीय काव्य भारतीय साहित्य में स्वतंत्रता, स्वाभिमान और पराक्रम की परंपरा का प्रारंभ है। "पृथ्वीराज रासो" और "आल्हखंड" ऐसे आदर्श उदाहरण हैं जो युगों-युगों

File Provided by GKPAD.COM

तक राष्ट्रीय भावना को जगाते रहे। राजनीतिक दृष्टि से ये क्षेत्रीय काव्य हैं, परंतु भावनात्मक दृष्टि से ये भारत के आरंभिक *राष्ट्रीय साहित्य* हैं।

Unit II: भक्ति एवं रीतिकाल का राष्ट्रीय काव्य

भूमिका

वीरगाथाकाल के बाद हिंदी साहित्य में भक्ति और रीति युग विकसित हुआ। भक्ति युग (14वीं से 17वीं शताब्दी) मुख्य रूप से धार्मिक आस्था और ईश्वर भक्ति पर केंद्रित था। लेकिन उसी काल में और उसके बाद रीतिकालीन काव्यधारा में राजनीति एवं राष्ट्रीय चेतना का भी प्रबल स्वरूप सामने आया। जब देश पर विदेशी शासन स्थापित हो चुका था और जनता दमन व शोषण झेल रही थी, उस समय कवियों ने राजाओं और वीरों को जाग्रत करने हेतु काव्य की रचना की।

इस प्रकार, भक्ति और रीति की धाराओं के भीतर भी कई कवियों ने राष्ट्र की रक्षा, वीरता, बलिदान और स्वतंत्रता के उद्घोष किए। इस इकाई में विशेष रूप से गुरु गोबिन्द सिंह और भूषण जैसे कवियों का राष्ट्रीय काव्य अध्ययन किया जाता है।

गुरु गोबिन्द सिंह (1666–1708 ई.)

जीवन परिचय

गुरु गोबिन्द सिंह सिखों के दसवें गुरु थे। उनका जन्म पटना (1666 ई.) में हुआ और 1708 ई. में नांदेड़ (महाराष्ट्र) में उनका निधन हुआ। वे केवल धार्मिक गुरु ही नहीं, बल्कि अद्वितीय *वीर योद्धा, कवि, संत और राष्ट्रनायक* भी थे। उन्होंने 'खालसा पंथ' की स्थापना की, जिससे सिखों को सैन्य संगठन मिला और देश के लिए संघर्ष करने की प्रेरणा मिली।

काव्य और साहित्यिक योगदान

गुरु गोबिन्द सिंह द्वारा रचित ग्रंथ हैं—

File Provided by GKPAD.COM

- दशम ग्रंथ
- ज़फ़रनामा
- चंडी चरित्र
- बिचित्र नाटक

ये रचनाएँ वीरता, आत्मबलिदान और राष्ट्रीयता से परिपूर्ण हैं।

राष्ट्रीय काव्य दृष्टि

- गुरु गोबिन्द सिंह का पूरा जीवन और काव्य *मुग़ल अत्याचार* के प्रतिरोध का प्रतीक है।
- उन्होंने अपने अनुयायियों में आत्मगौरव और स्वतंत्रता की भावना जाग्रत की।
- काव्य में केवल धार्मिकता नहीं, अपितु स्वाधीनता, संघर्ष और न्याय की प्रेरणा है।

निर्दिष्ट अंशों का भावार्थ

1. 'देहु शिव वर मोहि इहे" – इसमें कवि प्रार्थना करता है कि मुझे ऐसा वरदान मिले कि मैं धर्म की रक्षा हेतु कभी भी संघर्ष से पीछे न हटूँ। यह *राष्ट्र रक्षा और धर्म रक्षा का उद्घोष* है। यह अंश आज भी सैनिकों और देशभक्तों के लिए प्रेरणा स्रोत है।
2. 'बाण चले तेरी कुंकुम मानो" – इसमें युद्ध का दृश्य प्रस्तुत है कि जब तीर चल रहे हैं तो मानो रक्त की धारा बह रही हो। यह वीर रस का अत्यंत ओजस्वी चित्रण है, जिससे सैनिकों में वीरता का संचार होता है।
3. 'यों सुनि के बतियाने तिह की" – यह संवादात्मक अंश है जिसमें प्रतिरोध की भावना उत्पन्न होती है। यह कवि का संदेश है कि शत्रु की धौंस सुनकर वीर को अवश्य शस्त्र उठाना चाहिए।

सारांश – गुरु गोबिन्द सिंह का काव्य धार्मिक भक्ति और राष्ट्रीय चेतना का अद्भुत मेल है। उनके काव्य में केवल युद्ध वर्णन नहीं, बल्कि *धार्मिक स्वतंत्रता और राष्ट्रीय सम्मान की रक्षा* का उद्घोष है।

File Provided by GKPAD.COM

भूषण (1613–1717 ई.)

जीवन परिचय

भूषण हिंदी साहित्य के प्रख्यात कवि थे, जिन्हें *रीतिवादकालीन वीर रस आश्रित कवियों* में सर्वोच्च स्थान प्राप्त है। उनका वास्तविक नाम संभवतः चतुर्भुज हो सकता है, किंतु वे भूषण नाम से प्रसिद्ध हैं।

- जन्म: टीकापुर (कानपुर जिला) (लगभग 1613 ई.)
- आश्रयदाता: छत्रपति शिवाजी महाराज और छत्रसाल बुंदेला
- विशेषता: ओजस्वी वीर रस के पदों से युक्त राष्ट्रवादी काव्य

भूषण ने अपनी कविता द्वारा शिवाजी को *हिंदवी स्वराज्य* के लिए औरंगजेब से संघर्ष करने हेतु प्रेरणा दी।

भूषण की भाषा और शैली

- भाषा: मुख्यतः *ब्रजभाषा*
- शैली: ओजपूर्ण, अलंकारयुक्त, वीर रस प्रधान
- छंद: दोहा, कवित्त, सवैया
- विशेषता: अलंकारों और अनुप्रास का शक्तिशाली प्रयोग, जो कविताओं को भीषण युद्ध के समान गतिशील बना देता है।

राष्ट्रीय चेतना

- भूषण ने अपने काव्य में शिवाजी, छत्रसाल और अन्य हिंदू राजाओं के शौर्यगान द्वारा जनता को मुक्तिसंग्राम की प्रेरणा दी।
- उनका काव्य केवल प्रशंसा नहीं, बल्कि *युद्धघोष* है।
- इन कविताओं में निहित राष्ट्रीयता जनता को गुलामी और अन्याय के विरुद्ध विद्रोह हेतु उद्दीप्त करती है।

File Provided by GKPAD.COM

निर्दिष्ट अंशों का भावार्थ

1. 'इन्द्र जिमि जम्भ पर" – इसमें शिवाजी के पराक्रम की तुलना इन्द्र देव की असुरों पर विजय से की गई है। इसमें छत्रपति का वर्णन नायक के रूप में किया गया है, जिनकी वीरता दिव्य और अपराजेय प्रतीत होती है।
2. 'बांधे फहराने, निज म्यान ते मयूखएं" – इसमें शिवाजी की सेना का अद्भुत और भयानक चित्र खींचा गया है। तलवारों से जो ज्योति निकलती है, वह मानो सूर्य की किरणों की भांति तेजस्वी है। यह दृश्य राष्ट्रीय गौरव और शक्ति का प्रतीक है।
3. 'दारुन दहत हरनाकुस विदारिबे कों" – यह वीर रस का चरम दृश्य है जिसमें राजा की तुलना नृसिंह अवतार से की गई है, जो हिरण्यकश्यप का वध करके धर्म की रक्षा करते हैं। यहां धर्मरक्षा ही राष्ट्ररक्षा का पर्याय बन जाता है।

सारांश – भूषण का काव्य सीधा-सीधा *स्वाधीनता और स्वराज्य का शंखनाद* है। इसमें एक ओर ओज और रससिद्धि है, तो दूसरी ओर तत्कालीन राष्ट्रीय संघर्ष की स्पष्ट भूमिका है।

भक्ति एवं रीति युग के राष्ट्रीय काव्य की विशेषताएँ

- धार्मिकता और राष्ट्र का मेल: इस समय राष्ट्रीयता धर्म से जुड़ी हुई थी। धर्म की रक्षा ही राष्ट्र की रक्षा मानी जाती थी।
- संघर्ष का उद्घोष: मध्यकालीन दमन से त्रस्त जनता को कवियों ने शौर्य और पराक्रम की प्रेरणा दी।
- आधुनिक राष्ट्रीयता की नींव: भले ही इसमें क्षेत्रीय व धार्मिक रंग है, परंतु यही आगे चलकर आधुनिक स्वतंत्रता आंदोलन की मानसिक चेतना बनी।
- लोकप्रियता: इन कविताओं को जनता ने गाया, सुना और युद्ध या संघर्ष के अवसरों पर उद्धृत किया।

File Provided by GKPAD.COM

गुरु गोबिन्द सिंह और भूषण की तुलना

पक्ष	गुरु गोबिन्द सिंह	भूषण
जीवनकाल	1666–1708 ई.	1613–1717 ई.
प्रमुख आश्रयदाता/संबंध	सिख पंथ, खालसा संगठन	शिवाजी, छत्रसाल बुंदेला
काव्य की भाषा	ब्रज और पंजाबी मिश्रित	शुद्ध ब्रजभाषा
मुख्य विषय	धर्म रक्षा, आत्मबलिदान, स्वतंत्रता	शिवाजी और हिंदवी स्वराज्य का शौर्यगान
शैली	धार्मिक आस्था + वीर रस का संयोग	भरपूर वीर रस, ओज और अलंकारिक भव्यता
राष्ट्रीयता का रूप	धर्म और राष्ट्र की एकता	मुग़ल सत्ता से संघर्ष, आज़ादी का उद्घोष

मूल्यांकन

गुरु गोबिन्द सिंह और भूषण दोनों ने अपनी कविताओं से भारतीय जनमानस में स्वतंत्रता और स्वाभिमान का बीज बोया।

- गुरु गोबिन्द सिंह ने अपने अनुयायियों को खालसा बना धर्म व देश रक्षा के लिए संगठित किया।
- भूषण ने शिवाजी के स्वराज्य संग्राम को साहित्यिक स्वरूप देकर मुग़ल सत्ता को खुला चुनौती दी।

GKPAD.COM

उनका काव्य केवल साहित्यिक उपलब्धि नहीं, बल्कि *संघर्षकाल का घोषपत्र* है, जिसने राष्ट्रीयता की ज्योति को जीवित रखा।

निष्कर्ष

भक्ति और रीतिकालीन राष्ट्रीय काव्य हिंदी साहित्य में वीरता, पराक्रम और धर्मरक्षा के संदेश का प्रबल वाहक है। गुरु गोबिन्द सिंह और भूषण ने अपने शौर्यपूर्ण पदों के माध्यम से जनता को अन्याय और दमन के विरुद्ध खड़े होने की प्रेरणा दी।

इन रचनाओं से स्पष्ट होता है कि उस समय राष्ट्र का अर्थ क्षेत्र और धर्म से जुड़ा था, किंतु इसी चेतना ने आगे चलकर आधुनिक राष्ट्रवाद की नींव रखने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

Unit III: भारतेंदु एवं द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय काव्य

भूमिका

भारतेंदु और द्विवेदी युग हिंदी साहित्य में राष्ट्रीय चेतना और आधुनिकता की शुरुआत का काल है। यदि वीरगाथाकाल में राष्ट्रीयता वीर-पराक्रम और क्षेत्रीय स्वाधीनता के रूप में व्यक्त हुई थी, तथा भक्ति-रीति काल में धर्म रक्षा और परोक्ष राष्ट्रवाद दिखा था, तो भारतेंदु–द्विवेदी काल में यह चेतना आधुनिक राजनीतिक राष्ट्रवाद के रूप में उभरती है।

भारत में 19वीं सदी अंग्रेज़ी सत्ता का काल था। औपनिवेशिक शासन की दमनकारी नीतियों ने जनता में स्वतंत्रता की आकांक्षा जगाई। इसी काल में राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक पुनर्जागरण हुआ। हिंदी साहित्य भी इससे अछूता नहीं रहा। भारतेंदु हरिश्चंद्र और महावीर प्रसाद द्विवेदी जैसे आचार्यों ने कविता को केवल सौंदर्य और श्रृंगार तक सीमित न रखते हुए राष्ट्रीय और सामाजिक उत्थान का साधन बनाया।

भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850–1885)

File Provided by GKPAD.COM

परिचय

- जन्म: 9 सितंबर 1850, वाराणसी
- निधन: 6 जनवरी 1885
- उपाधि: *'आधुनिक हिंदी साहित्य के जनक"*
- विशेषता: हिंदी खड़ी बोली काव्य के प्रवर्तक, गद्य-पद्य के मर्मज्ञ
- कार्य: नाटक, निबंध, कविताएँ, पत्रकारिता
- साहित्यिक आंदोलन: भारतेंदु मंडल की स्थापना, जिसने साहित्य को सामाजिक और राष्ट्रीय सरोकार दिए।

काव्य में राष्ट्रीय चेतना

भारतेंदु ने राष्ट्रीयता को दो रूपों—*सांस्कृतिक गौरव* और *राजनीतिक चेतना*—में प्रस्तुत किया। उनकी कविताओं में गुलामी की पीड़ा, आर्थिक शोषण, अंग्रेज़ी शासन की नीतियों की आलोचना तथा भारतीय सांस्कृतिक गौरव का गान मिलता है।

उपयूनिट (निर्दिष्ट रचनाएँ)

1. 'उन्नति चितह्वै आर्य परस्पर प्रीत बढ़ावें"
    - यहाँ भारतेंदु भारतीय आर्य समाज को संबोधित करते हुए कहते हैं कि आपसी प्रीति, सहयोग और एकता से ही समाज और राष्ट्र का उन्नयन संभव है।
    - यह सीधा सामाजिक और राष्ट्रीय जागरण का संदेश है।
2. 'बल कला कौशल अमित विद्या वत्स भरे मिल लहै"
    - यहाँ शिक्षा, कला और विद्या को राष्ट्रीय उत्थान का साधन माना गया है। भारतेंदु ने आधुनिक ज्ञान की ओर ध्यान दिलाया और स्वदेशी शिक्षा की महत्ता बताई।
3. 'भीतर भीतर सब रस चूसै, सब गुरुजन को बुरो बतावै"

File Provided by GKPAD.COM

- इसमें उस समय की सामाजिक बुराइयों जैसे—स्वार्थ, भ्रष्टाचार और आपसी फूट की आलोचना है। भारतेंदु ने माना कि यदि भारतीय समाज अपनी कमजोरियों को दूर नहीं करेगा तो राष्ट्रीय उन्नति असंभव है।

सारांश: भारतेंदु हरिश्चंद्र का काव्य स्वतंत्रता आंदोलन से पहले *राष्ट्रीय आत्मबोध* जगाने वाला है। उन्होंने साहित्य को जनजागरण का हथियार बनाया।

अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865–1947)

परिचय

- जन्म: 16 अप्रैल 1865, आज़मगढ़ (उ.प्र.)
- निधन: 16 मार्च 1947
- उपाधि: आधुनिक हिंदी के श्रेष्ठ कवि, आलोचक और विचारक
- साहित्यिक योगदान: *प्रिय प्रवासी*, *चूबते तारे*, *अंधेर नगरी*, *काव्यालंकार* आदि
- विशेषता: कवि हरिऔध ने रत्नाकर और हरिऔध नामों से भी रचना की। उनकी कविता में भावुकता, राष्ट्रप्रेम और करुणा का सुंदर समन्वय है।

राष्ट्रीय चेतना

हरिऔध की कविता में राष्ट्रभाव, मातृभूमि के प्रति समर्पण और कर्मयोग की प्रेरणा गहराई से मिलती है। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन की चेतना से प्रभावित होकर मातृभूमि को देवस्वरूप माना।

उपयूनिट (निर्दिष्ट रचनाएँ)

1. 'कर्मवीर"
    - इसमें कवि का संदेश है कि केवल कर्मवीर ही समाज और राष्ट्र का उत्थान कर सकते हैं।

File Provided by GKPAD.COM

- निष्क्रियता और आलस्य पतन का कारण है, जबकि कर्मशीलता राष्ट्रीय उत्थान का आधार।
- यहाँ कवि ने भारतीय जनता को सक्रिय कर्म में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दी।

2. 'जन्मभूमि"
    - इसमें कवि मातृभूमि के प्रति अनन्य प्रेम प्रकट करते हैं।
    - मातृभूमि को माता मानकर उसके लिए बलिदान को श्रेष्ठ बताया गया है।
    - कवि ने भावुक होकर कहा कि मातृभूमि ही जीवन की पहचान है और उसी पर राष्ट्र की संस्कृति टिकी है।

सारांश: हरिऔध का काव्य भारतीय राष्ट्रवाद के गौरव को भावुक कविता के रूप में प्रस्तुत करता है। वे भारत को मातृभूमि मानकर उसकी सेवा के लिए कर्मयोग की प्रेरणा देते हैं।

मैथिलीशरण गुप्त (1886–1964)

परिचय

- जन्म: 3 अगस्त 1886, चिरगाँव, झाँसी (उ.प्र.)
- निधन: 12 दिसंबर 1964
- उपाधि: *राष्ट्रकवि*
- शैली: खड़ी बोली काव्य के महान निर्माता
- साहित्यिक योगदान: *भारत-भारती*, *पंचवटी*, *यशोधरा*, *साकेत* आदि
- विशेषता: गुप्त जी ने हिंदी कविता को राष्ट्रीय आंदोलन का स्वरूप दिया।

राष्ट्रीय चेतना

File Provided by GKPAD.COM

मैथिलीशरण गुप्त के काव्य में प्रत्यक्ष रूप से भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन की गूँज सुनाई देती है। उनका महाकाव्य *भारत-भारती* स्वतंत्रता युगीन भारत का *घोषणापत्र* है।

उपयूनिट (निर्दिष्ट रचनाएँ)

1. 'आर्य"
    - इसमें भारतीय समाज के गौरवशाली अतीत का स्मरण है।
    - कवि ने भारतीयों को अपने आर्यत्व के गौरव की याद दिलाई और स्वाभिमान जगाया।
    - यह अंश राष्ट्रीय पुनर्जागरण का प्रतीक है।
2. 'मातृभूमि"
    - मातृभूमि के प्रति असीम प्रेम का अत्यंत भावुक व ओजस्वी चित्रण।
    - कवि कहते हैं कि मातृभूमि के लिए बलिदान ही जीवन का परम लक्ष्य है।
    - यहाँ राष्ट्रभक्ति को मातृभक्ति बना दिया गया।

सारांश: मैथिलीशरण गुप्त का काव्य स्वतंत्रता आंदोलन के लिए सजीव प्रेरणा था। गांधीजी ने उन्हें *'राष्ट्रकवि"* कहकर सम्मानित किया।

भारतेंदु–द्विवेदी युगीन राष्ट्रीय काव्य की विशेषताएँ

- राष्ट्रीय चेतना का उदय: साहित्य पहली बार राजनीतिक आंदोलन और जनजागरण से सीधा जुड़ा।
- जनभाषा का प्रयोग: खड़ी बोली को राष्ट्रीय भाषा बनाने का प्रयास।
- सांस्कृतिक गौरव: अतीत की स्मृतियों के माध्यम से आत्मगौरव जगाना।
- राजनीतिक आलोचना: अंग्रेज़ी शासन की दमनकारी नीतियों की प्रत्यक्ष आलोचना करना।

File Provided by GKPAD.COM

- स्वराज्य की प्रेरणा: जनता को सक्रियता, कर्मशीलता और बलिदान के लिए प्रेरित करना।

तुलनात्मक दृष्टि

कवि	स्वरूप और विषय	राष्ट्रीय चेतना का रूप
भारतेंदु हरिश्चंद्र	आरंभिक आधुनिक कवि, सामाजिक सुधार, जागरण	शिक्षा, सहयोग और एकता का संदेश
हरिऔध	भावुक राष्ट्रकवि	मातृभूमि प्रेम और कर्मयोग की प्रेरणा
मैथिलीशरण गुप्त	गांधी युगीन राष्ट्रकवि	स्वाभिमान, बलिदान और स्वराज्य का उद्घोष

मूल्यांकन

भारतेंदु, हरिऔध और मैथिलीशरण गुप्त ने हिंदी साहित्य को केवल काव्य तक सीमित न रखकर राष्ट्रीय चेतना का माध्यम बनाया।

- भारतेंदु ने *राष्ट्रजागरण* की नींव रखी।
- हरिऔध ने *मातृभूमि की भावुक छवि* प्रस्तुत की।
- गुप्त ने *स्वाधीनता आंदोलन का घोषणापत्र* लिखा और राष्ट्रकवि कहलाए।

निष्कर्ष

File Provided by GKPAD.COM

भारतेंदु और द्विवेदी युग का काव्य हिंदी साहित्य में राष्ट्रीयता के विकास का सशक्त चरण है। यह काल साहित्य को जनसेवा और राष्ट्रीयरागिनी में ढाल देता है। भारतेंदु हरिश्चंद्र, हरिऔध और मैथिलीशरण गुप्त तीनों कवि अपनी-अपनी शैली में राष्ट्र की चेतना के प्रणेता बने।

भारतेंदु ने चेतना जगाई, हरिऔध ने मातृभूमि की महिमा गायी और गुप्त ने स्वतंत्रता आंदोलन को तेजस्वी स्वरूप दिया। इस प्रकार, इन कवियों का काव्य भारतीय राष्ट्रीय साहित्य की आधारशिला और स्वतंत्रता आंदोलन का प्रेरक स्रोत बना।

Unit IV: छायावाद युगीन राष्ट्रीय काव्य

भूमिका

हिंदी साहित्य का छायावाद काल (1918–1936) हिंदी काव्य का स्वर्णकाल माना जाता है। इस युग में काव्य में गहन आत्मानुभूति, व्यक्तिवाद, प्रकृति-सौंदर्य, रहस्यवाद, करुणा और प्रेम का अद्भुत संगम हुआ। हिंदी साहित्य को रामधारी सिंह दिनकर ने कहा है—"छायावाद युवावस्था की उषा है।"

हालाँकि छायावाद का प्रमुख स्वर *काव्य-सौंदर्य और आत्म-अभिव्यक्ति* था, लेकिन भारतीय ऐतिहासिक परिदृश्य में यह वह समय था जब स्वतंत्रता संग्राम पूरे जोश पर था। गांधीजी के नेतृत्व में भारतवासी स्वराज्य के लिए आंदोलित हो रहे थे। कवियों ने भी इस वातावरण को आत्मसात किया। अतः छायावादी कविताओं में राष्ट्रप्रेम और राष्ट्रीय जागरण का स्वर निरंतर गूँजता है, जिसका विशेष रूप से दर्शन प्रमुख कवि प्रसाद, निराला, चतुर्वेदी और सुभद्रा कुमारी चौहान की रचनाओं में होता है।

जयशंकर प्रसाद (1889–1937)

परिचय

- जन्म: 30 जनवरी 1889, वाराणसी
- निधन: 15 नवंबर 1937

File Provided by GKPAD.COM

- विशेषता: *महाकवि*, छायावाद के स्तंभचारों में प्रमुख
- साहित्यिक योगदान: *कामायनी* (महाकाव्य), *आँसू* (काव्य संग्रह), *स्कंधगुप्त*, *चंद्रगुप्त* (नाटक), *ध्रुवस्वामिनी*
- छायावाद में रहस्यवाद, सांस्कृतिक गौरव और राष्ट्रप्रेम का समन्वय उनके काव्य की धुरी है।

निर्दिष्ट राष्ट्रीय काव्य

1. 'प्रयाण गीत (हिमाद्रि तुंग श्रृंग)"
    - यह कविता भारत की महान परंपरा और देश की संस्कृति का गौरवपूर्ण वर्णन है।
    - कवि हिमालय की ऊँची चोटियों से देश के लिए बलिदान और कर्तव्य की प्रेरणा देता है।
    - यह कविता युवाओं को शौर्य और संघर्ष का आह्वान करती है।
2. 'अरुण यह मधुमय देश हमारा"
    - इसमें कवि ने भारत भूमि के सौंदर्य और गौरव का चित्रण किया है।
    - सूर्योदय के रूपक से कवि राष्ट्रीय जागरण की ओर संकेत करता है।
    - यह कविता भारतवर्ष की एकता, उज्ज्वल भविष्य और मातृभूमि के प्रेम को अभिव्यक्त करती है।

सारांश: प्रसाद के राष्ट्रीय काव्य सांस्कृतिक स्मरण और बलिदानी प्रेरणा का संगम हैं। वह केवल राष्ट्रप्रेम नहीं लिखते, बल्कि राष्ट्रीय गौरव और आत्मबल का आध्यात्मिक पाठ पढ़ाते हैं।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' (1896–1961)

परिचय

File Provided by GKPAD.COM

- जन्म: 21 फरवरी 1896, महिषादल (प. बंगाल)
- निधन: 15 अक्टूबर 1961
- उपाधि: *महाप्राण*
- योगदान: *अनामिका, परिमल, जुही की कली, राम की शक्ति पूजा* आदि।
- विशेषता: निराला कवि, संघर्षशील व्यक्ति और राष्ट्रीय चेतना के प्रतीक थे।

निर्दिष्ट राष्ट्रीय काव्य

1. 'भारती वंदना (भारतिजय विजय करे)"
    - यहाँ कवि ने भारतमाता की स्तुति करते हुए स्वतंत्रता के संघर्ष में विजय की कामना की।
    - 'भारतिजय विजय करे" पुनरावृत्ति औपनिवेशिक सत्ता के विरोध में राष्ट्रीय चेतना का उद्घोष करती है।
2. 'जागो फिर एक बार"
    - यह कविता भारतीय युवाओं को पुकार है।
    - कवि कहता है कि सोए मत रहो, जागो और स्वतंत्रता की लड़ाई लड़ो।
    - इसमें सामरिक ऊर्जा, प्रेरणा और क्रांतिकारी स्वर हैं।

सारांश: निराला की कविताओं में राष्ट्रप्रेम आक्रामक है। वे केवल सांस्कृतिक गौरव की बात नहीं करते, बल्कि प्रत्यक्ष संघर्ष और विद्रोह का आह्वान करते हैं।

माखनलाल चतुर्वेदी (1889–1968)

परिचय

- जन्म: 4 अप्रैल 1889, बाबई (म. प्र.)

File Provided by GKPAD.COM

- निधन: 30 जनवरी 1968
- उपाधि: *स्वतंत्रता संग्राम सेनानी कवि*, 'पंडित माखनलाल चतुर्वेदी"
- योगदान: निबंध, पत्रकारिता, कविता। स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी।
- विशेषता: उनकी कविताएँ राष्ट्रीय आंदोलन के नारे की तरह थीं। उनके गीत आंदोलनकारी जनता के बीच गाए जाते।

निर्दिष्ट राष्ट्रीय काव्य

1. 'पुष्प की अभिलाषा"
    - यह कविता स्वतंत्रता आंदोलन की अमर कविता है।
    - इसमें पुष्प कहता है कि वह किसी महल की शोभा न बने, किसी प्रिय के केशों को न सजाए, बल्कि *वीरों की पगडंडी पर बिछ जाए*।
    - यह देशभक्ति और बलिदान का सर्वोच्च उदाहरण है।
2. 'जवानी"
    - इसमें कवि युवाओं को संघर्ष, विद्रोह और आत्मबलिदान की प्रेरणा देता है।
    - भारतीय युवा अपने यौवन को मातृभूमि के लिए समर्पित करें—यह इसका संदेश है।

सारांश: माखनलाल चतुर्वेदी का राष्ट्रीय काव्य सीधे स्वतंत्रता संग्राम का हिस्सा था। उनकी कविताएँ नारे और गीत की तरह आंदोलनकारियों के उत्साह का स्रोत बनीं।

सुभद्रा कुमारी चौहान (1904–1948)

परिचय

- जन्म: 16 अगस्त 1904, निवार (म. प्र.)

File Provided by GKPAD.COM

- निधन: 15 फरवरी 1948
- विशेषता: भारत की प्रथम महिला स्वतंत्रता सेनानी कवयित्री
- योगदान: *मुकुल*, *झाँसी की रानी* और कई राष्ट्रगीत
- स्वतंत्रता संग्राम के सत्याग्रह आंदोलनों में भाग लिया, जेल गईं।

निर्दिष्ट राष्ट्रीय काव्य

1. 'वीरों का कैसा हो बसंत"
    - इस कविता में कवयित्री पूछती हैं कि वीरों का बसंत कैसा हो?
    - उत्तर देती हैं: जहाँ रणभूमि में रक्त की धार बह रही हो, वहीं बसंत है।
    - यह क्रांतिकारी गीत युवाओं के लिए युद्ध पुकार है।
2. 'झाँसी की रानी"
    - यह कविता भारत की सबसे लोकप्रिय राष्ट्रीय कविताओं में से एक है।
    - इसमें रानी लक्ष्मीबाई के शौर्य और बलिदान का वर्णन है।
    - यह कविता आज भी स्वतंत्रता संग्राम की प्रेरणा बनी हुई है— *'झाँसी की रानी"* को राष्ट्रीय प्रतीक बना दिया।

सारांश: सुभद्रा कुमारी चौहान की कविताएँ क्रांति की पुकार हैं। खासकर 'झाँसी की रानी" बालक-बालिकाओं तक राष्ट्रीय चेतना का संचार करती है।

छायावादी राष्ट्रीय काव्य की विशेषताएँ

- स्वतंत्रता आंदोलन की गूँज: कविताएँ सीधे अंग्रेज़ों के खिलाफ विद्रोही स्वर में लिखी गईं।
- बलिदान प्रेरणा: मातृभूमि के लिए जीवन अर्पित करने का संदेश।

File Provided by GKPAD.COM

- सांस्कृतिक गौरव: भारतभूमि को देवी-स्वरूप मानकर उसकी महिमा गाई गई।
- युवा चेतना: कविताओं में युवाओं के लिए जागरण और क्रांति का आह्वान।
- गीतात्मकता और ओज: ये कविताएँ गीत रूप में आंदोलनकारियों के बीच गाई जाती थीं।

तुलनात्मक दृष्टि

कवि	काव्य स्वरूप	राष्ट्रीय दृष्टि
जयशंकर प्रसाद	सांस्कृतिक गौरव, त्याग और बलिदान की प्रेरणा	आध्यात्मिक शक्ति और संस्कृति से जागरण
निराला	क्रांतिकारी स्वर, विद्रोह और संघर्ष	सीधे संघर्ष और विद्रोह का आह्वान
माखनलाल चतुर्वेदी	गीतात्मक ओज, बलिदान प्रेरणा	आंदोलन के गीत, जनजागरण का शंखनाद
सुभद्रा कुमारी चौहान	महिला शक्ति, वीरता, क्रांतिकारिता	झाँसी की रानी का राष्ट्रीय प्रतीक

मूल्यांकन

छायावाद युगीन राष्ट्रीय काव्य ने न केवल साहित्य को सौंदर्य और आत्मानुभूति प्रदान की, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम में जन-जन को प्रेरित किया।

- प्रसाद ने संस्कृति और राष्ट्र की गौरव-गाथा गाई।

File Provided by GKPAD.COM

- निराला ने विद्रोह और क्रांति का स्वर दिया।
- चतुर्वेदी ने पुष्प की अभिलाषा के रूप में बलिदान की आदर्श कल्पना दी।
- सुभद्रा चौहान ने लक्ष्मीबाई जैसी नायिका का शौर्य लोकगीत बना दिया।

निष्कर्ष

छायावादी काल केवल *रहस्यवाद और रोमांटिकता* का युग नहीं है। यह काल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की पृष्ठभूमि में राष्ट्रीय आंदोलन का साहित्यिक घोषणाकाल था।

जयशंकर प्रसाद, निराला, माखनलाल चतुर्वेदी और सुभद्रा कुमारी चौहान ने अपने काव्य से भारतीय जनता के हृदय में राष्ट्रभक्ति की ऐसी ज्वाला प्रज्वलित की, जिसने स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी। इस प्रकार छायावादी काव्य राष्ट्रभक्ति साहित्य का उज्ज्वल अध्याय है।

Unit V: छायावादोत्तर राष्ट्रीय काव्य

भूमिका

छायावाद के पश्चात् हिंदी साहित्य का जो युग आरंभ होता है, उसे सामान्यतः छायावादोत्तर युग (1937 से 1950 तक) कहा जाता है। यह युग भारत के स्वतंत्रता आंदोलन के चरम समय और उसके बाद स्वतंत्रता प्राप्ति का युग है। इसी समय कविता छायावाद की आत्मलीन भावुकता से बाहर निकलकर प्रगतिवाद, प्रयोगवाद और राष्ट्रीय यथार्थवादी स्वर अपनाती है।

इस समय कवि केवल आंतरिक अनुभूतियों तक सीमित नहीं रहते, बल्कि सामाजिक संघर्ष, राजनीतिक आंदोलन और राष्ट्रीय उत्साह में अपने काव्य को ढालते हैं। यही कारण है कि छायावादोत्तर काव्य-धारा में राष्ट्रीय भावना अत्यधिक प्रबल दिखाई देती है।

इस इकाई में प्रस्तुत कवि – बालकृष्ण शर्मा नवीन, रामधारी सिंह 'दिनकर' और श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' – तीनों राष्ट्रीय काव्यधारा के महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि हैं।

File Provided by GKPAD.COM

बालकृष्ण शर्मा 'नवीन' (1897–1960)

परिचय

- जन्म: 8 दिसंबर 1897, ग्राम पिबारकोला (म.प्र.)
- निधन: 29 अप्रैल 1960
- विशेषता: नवीन जी कवि, राजनीतिज्ञ और पत्रकार थे। वे स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय थे तथा नेहरूवाद और समाजवादी चिंतन से जुड़े थे।
- साहित्यिक योगदान: *कुण्डली-शक्ति*, *अपनी झांकी*, *नवीन काव्य-संग्रह* आदि।
- उनकी कविता भावनात्मक ओज, रोमांच और राष्ट्रीय नाद से परिपूर्ण है।

राष्ट्रीय चेतना

नवीन जी के काव्य में स्वतंत्रता आंदोलन का सीधा स्वर है। उनकी कविताएँ आंदोलनकारियों के लिए प्रेरणा और आह्वान बन जाती थीं।

निर्दिष्ट रचनाएँ

1. 'कवि कुछ ऐसी तान सुनाओ"
    - यह कविता कवि से सीधी अपील करती है कि वह ऐसी तान छेड़े जो सोए हुए भारतवासियों को जगा सके।
    - कविता में कला को मात्र सौंदर्य-भोग के लिए न मानकर राष्ट्रीय चेतना जागृत करने का संदेश दिया गया।
    - राष्ट्रीय कर्तव्य और बलिदान की प्रेरणा इसमें निहित है।
2. 'कोटि-कोटि कंठों से निकली आज यही स्वर धारा है"
    - यह कविता स्वतंत्रता आंदोलन के सामूहिक स्वर की अभिव्यक्ति है।
    - "कोटि-कोटि कंठों" का प्रयोग पूरे भारतीय समाज की सम्मिलित शक्ति का प्रतीक है।

File Provided by GKPAD.COM

- इसमें स्वतंत्रता संग्राम को जनांदोलन और सामूहिक क्रांति के स्वरूप में चित्रित किया गया है।

सारांश: नवीन की कविताएँ उस समय *राष्ट्रीय अभियान के गीत* थीं। इनमें सामूहिकता, अजस्र ऊर्जा और स्वतंत्रता की ध्वनि प्रबल है।

रामधारी सिंह 'दिनकर' (1908–1974)

परिचय

- जन्म: 23 सितंबर 1908, गाँव सिमरिया, जिला बेगूसराय (बिहार)
- निधन: 24 अप्रैल 1974
- उपाधि: *'राष्ट्रकवि दिनकर"*
- विशेषता: वे स्वतंत्रता आंदोलन के साथ जुड़े, संसद सदस्य रहे, और साहित्य अकादमी व ज्ञानपीठ से सम्मानित हुए।
- साहित्यिक योगदान: *हुंकार, रसवन्ती, कुरुक्षेत्र, उर्वशी, संस्कृत काव्यधारा* आदि।
- विशेषता: ओज, वीर रस और राष्ट्रीय चेतना से भरा काव्य।

राष्ट्रीय चेतना

दिनकर का काव्य स्वतंत्रता संग्राम का घोषपत्र है। वे सीधे सीधे जनता को संघर्ष, विद्रोह और आत्मबलिदान की प्रेरणा देते हैं। उनके काव्य में क्रांतिधर्मिता, राष्ट्रीय अभिमान और संघर्षशील जीवन-दर्शन सब स्पष्ट रूप में है।

निर्दिष्ट रचनाएँ

1. 'शहीद स्तवन (कलम आज उनकी जय बोल)"
    - यह कविता भारतीय स्वतंत्रता सेनानियों के बलिदान का गान है।

File Provided by GKPAD.COM

- कवि कहता है कि शहीदों की जय बोलो, क्योंकि हम स्वतंत्रता उनके कारण प्राप्त करेंगे।
- इसमें बलिदान की महिमा, शौर्य और राष्ट्रीय गौरव का ओजस्वी स्वर है।

2. 'हिमालय"
    - यह कविता भारत की सांस्कृतिक और राष्ट्रीय पहचान 'हिमालय" के गौरवगान के रूप में रची गई है।
    - कवि हिमालय को स्थिरता, धैर्य, त्याग और महानता का प्रतीक मानता है।
    - यह केवल भौगोलिक पर्वत नहीं, बल्कि राष्ट्रीय आत्मा का प्रतिनिधि रूप है।

सारांश: दिनकर के काव्य में राष्ट्रीयता केवल राजनीतिक नारे नहीं, बल्कि सांस्कृतिक गौरव और बलिदानी हृदय का घोष है।

श्यामलाल गुप्त 'पार्षद' (1896–1977)

परिचय

- जन्म: 16 सितंबर 1896, चिरगाँव, झाँसी (उ.प्र.)
- निधन: 10 अगस्त 1977
- विशेषता: *स्वतंत्रता सेनानी कवि*, सीधे राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़े।
- सबसे प्रसिद्ध कृति: झंडा गीत – 'विजयी विश्व तिरंगा प्यारा"
- भारत सरकार ने इस गीत को *राष्ट्रीय ध्वज-गान* के रूप में मान्यता प्रदान की।

राष्ट्रीय चेतना

पार्षद जी की कविताएँ सम्पूर्णत: राष्ट्रभक्ति और स्वतंत्रता से प्रेरित थीं। वे स्वयं आंदोलनों में सक्रिय थे और अनेक बार कारावास भोगा। उनके गीत स्वतंत्रता संग्राम में *नारे और गान* के रूप में प्रयोग किए जाते थे।

File Provided by GKPAD.COM

निर्दिष्ट रचना

1. ‘झंडा गीत (विजयी विश्व तिरंगा प्यारा)”
    - यह गीत भारतीय राष्ट्रीय ध्वज के गौरव का गान है।
    - कवि ने इसमें तिरंगे को *सांस्कृतिक एकता और स्वतंत्रता संघर्ष का प्रतीक* बनाया है।
    - यह गीत स्वतंत्रता आंदोलन के समय जनमानस की जुबान पर था और आज भी राष्ट्रीय अवसरों पर गाया जाता है।

सारांश: पार्षद का काव्य राष्ट्रीय ध्वज और स्वतंत्रता आंदोलन का प्रतीक-गान बन गया। यह सीधा राजनीतिक और राष्ट्रीय उद्घोष है।

छायावादोत्तर राष्ट्रीय काव्य की विशेषताएँ

- प्रत्यक्ष क्रांतिकारी स्वर: इस युग में कविताएँ अस्पष्ट रूपकों से अलग होकर सीधे *संघर्ष और स्वराज्य* की माँग करती हैं।
- सामूहिकता और जन-जागरण: नवीन और दिनकर जैसे कवि जनता को सामूहिक आंदोलन में जोड़ते हैं।
- बलिदानी संस्कृति: शहीदों, सैनिकों और झंडे का गान।
- सांस्कृतिक प्रतीक: हिमालय और तिरंगा जैसे भारतीय प्रतीक राष्ट्रीय चेतना के केंद्र बने।
- लोकप्रियता: ऐसी कविताएँ आंदोलन के नारों, गीतों और सार्वजनिक आयोजनों में गाई और पढ़ी गईं।

तुलनात्मक दृष्टि

File Provided by GKPAD.COM

कवि	काव्य विशेषता	राष्ट्रीय अभिव्यक्ति
बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'	ओजपूर्ण गीतात्मक काव्य	जनता को जगाने और सामूहिक स्वर देने की प्रेरणा
रामधारी सिंह 'दिनकर'	वीर रस, क्रांति और सांस्कृतिक गौरव	शहीदों व सैनिकों का गान, हिमालय को राष्ट्रीय प्रतीक
श्यामलाल गुप्त 'पार्षद'	आंदोलनकारी गीत	तिरंगे को राष्ट्रीय चेतना का प्रतीक बनाना

मूल्यांकन

छायावादोत्तर राष्ट्रीय काव्य मूलतः स्वतंत्रता आंदोलन के प्रत्यक्ष गीत हैं।

- नवीन कविता द्वारा सांस्कृतिक चेतना और सामूहिक स्वर जगाते हैं।
- दिनकर वीर रस और सांस्कृतिक चेतना के प्रवाह को स्वतंत्रता संग्राम से जोड़कर 'राष्ट्रकवि" बन जाते हैं।
- पार्षद ने तिरंगे को गाकर हर भारतीय के हृदय में राष्ट्रीय गौरव की भावना स्थापित कर दी।

निष्कर्ष

छायावादोत्तर राष्ट्रीय काव्य हिंदी साहित्य में स्वतंत्रता संग्राम के निर्णायक समय की सशक्त अभिव्यक्ति है। यह काव्य *संघर्ष का घोष, बलिदान का गीत और स्वराज्य का आह्वान* है।

File Provided by GKPAD.COM

नवीन के सामूहिक गीत, दिनकर की शौर्यपूर्ण पंक्तियाँ और पार्षद का झंडा गीत – इन सबने मिलकर भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन को साहित्यिक और सांस्कृतिक आधार दिया। इस प्रकार छायावादोत्तर राष्ट्रीय काव्य ने राष्ट्र को केवल स्वर ही नहीं, बल्कि संघर्ष और विजय का मंच भी प्रदान किया।

Unit VI: समकालीन राष्ट्रीय काव्य – प्रथम चरण

भूमिका

स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के बाद हिंदी काव्य की दिशा में बड़ा परिवर्तन हुआ। आज़ादी मिलने के बाद जहाँ एक ओर साहित्यकारों को राष्ट्रीय गर्व और उत्साह का अनुभव हुआ, वहीं दूसरी ओर उन्हें यह भी महसूस हुआ कि स्वाधीनता केवल राजनीतिक नहीं है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक स्तर पर भी स्थापित होनी चाहिए।

इस बदलते परिवेश में समकालीन राष्ट्रीय काव्य का उद्भव हुआ जिसे *प्रथम चरण* कहा जाता है। इसमें कवि न केवल स्वतंत्रता संग्राम की स्मृतियाँ लिखते हैं, बल्कि नव राष्ट्र-निर्माण और समाजीकरण की आकांक्षाओं को भी व्यक्त करते हैं। यहाँ शौर्य, वीरता और बलिदान का भाव तो है ही, साथ ही कर्तव्य, जागृति और नई पीढ़ी को राष्ट्रीय मूल्यों के प्रति सजग बनाने की चेतना भी है।

इस चरण के प्रतिनिधि कवि हैं: श्याम नारायण पांडेय (वीररस और ऐतिहासिक महाकाव्य परंपरा), द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (प्रेरणात्मक राष्ट्रगीत), और गोपाल प्रसाद व्यास (हास्य-व्यंग्य में राष्ट्रबोध)।

श्याम नारायण पांडेय (1907–1991)

परिचय

- जन्म: 1907, छत्तीसगढ़ (वर्तमान मध्यप्रदेश क्षेत्र)

File Provided by GKPAD.COM

- निधन: 1991
- काव्य शैली: वीर गाथात्मक महाकाव्यों के रचयिता, 'वीरगाथा परंपरा' को आधुनिक संदर्भ में जीवित करने वाले।
- प्रमुख कृतियाँ: *हल्दीघाटी, जसवन्ती, चेतक की वीरता, आल्हा-ऊदल पर आधारित रचनाएँ*।

राष्ट्रीय चेतना

श्याम नारायण पांडेय ने भारतीय इतिहास के वीरों को आधुनिक काल की चेतना से जोड़ा। उन्होंने हल्दीघाटी युद्ध और महाराणा प्रताप जैसे शौर्य-प्रतीकों को पुनर्जीवित कर राष्ट्र को बलिदान और स्वाभिमान की प्रेरणा दी।

निर्दिष्ट रचनाएँ

1. 'चेतक की वीरता"
    - यह रचना चेतक घोड़े के शौर्य और निष्ठा को अमर कर देती है।
    - चेतक केवल एक पशु नहीं, बल्कि राष्ट्रनिष्ठा, वफादारी और बलिदान का प्रतीक है।
    - इसमें कवि दिखाते हैं कि जब घोड़े तक में इतनी निष्ठा हो सकती है तो मनुष्य को अपनी मातृभूमि के लिए कितनी निष्ठा रखनी चाहिए।
    - यह रचना बलिदानी भावनाओं से ओत-प्रोत है।
2. 'राणा प्रताप की तलवार"
    - इसमें महाराणा प्रताप की तलवार वीरता, शौर्य और आत्मसम्मान की प्रतीक है।
    - यह तलवार केवल युद्ध का साधन नहीं, बल्कि स्वतंत्रता और राष्ट्रगौरव का प्रतीक है।
    - राष्ट्रप्रेम और आत्मबलिदान का अद्भुत गान इस रचना में मिलता है।

File Provided by GKPAD.COM

विशेष मूल्यांकन:

श्याम नारायण पांडेय ने अपने काव्य में *वीरगाथाकाल की परंपरा को आधुनिक संदर्भ में पुनर्जीवित* किया। चेतक और प्रताप की छवियाँ उनके काव्य को कालजयी बनाती हैं।

द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी (1916–1990)

परिचय

- जन्म: 1916, उत्तर प्रदेश
- निधन: 1990
- विशेषता: वे उस समय के प्रेरणादायी कवि थे जिनकी कविताएँ विद्यालयों, राष्ट्रीय आयोजनों और जनसभाओं में गाई जाती थीं।
- प्रमुख कृतियाँ: *पुस्तकों के गीत संग्रह, प्रेरणात्मक राष्ट्रगीत*।

राष्ट्रीय चेतना

माहेश्वरी जी ने स्वतंत्र भारत की नई पीढ़ी को जाग्रत करने हेतु गीत लिखे। उनकी कविताओं में ओज, स्वर और स्पष्ट प्रेरणात्मक भाषा है।

निर्दिष्ट रचनाएँ

1. 'उठो धरा के अमर सपूतों"
    - यह कविता भारत के युवाओं को संबोधित है।
        - कवि कहता है: उठो! यह तुम्हारा कर्तव्य है कि मातृभूमि के लिए अपनी शक्ति का समर्पण करो।
        - इसमें स्वतंत्र भारत के निर्माण हेतु कर्म, त्याग और सेवा का उद्घोष है।
2. 'वीर तुम बढ़े चलो"

File Provided by GKPAD.COM

- यह कविता राष्ट्रगीत की भांति है।
- कवि संदेश देता है कि कभी पीछे मत हटो, वीरों का मार्ग केवल आगे बढ़ना है।
- यह कविता विशेषतः सैनिकों और नवयुवकों में उत्साहवर्धक रही है।

विशेष मूल्यांकन:

माहेश्वरी जी के गीत स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी *राष्ट्र-निर्माण और कर्तव्य-पालन* की प्रेरणा देते हैं। उनकी कविताएँ आमजन के बीच गेय और प्रभावशाली रहीं।

गोपाल प्रसाद व्यास (1915–2005)

परिचय

- जन्म: 1915, उत्तर प्रदेश
- निधन: 2005
- उपाधि: *हास्य-व्यंग्य के शंखनादक*
- साहित्यिक योगदान: *कविता, हास्य और राष्ट्रगीत*।
- विशेषता: व्यास जी ने हास्य-व्यंग्य से भरे गीतों और राष्ट्रकाव्य की ओजस्वी रचनाओं का निर्माण किया।

राष्ट्रीय चेतना

उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर स्वतंत्र भारत तक राष्ट्रीय चेतना को अपनी कविताओं में जीवित रखा। उनका काव्य सीधे जनता की आवाज़ बनता है और राष्ट्रीय आदर्शों का आह्वान करता है।

निर्दिष्ट रचनाएँ

1. 'खूनी हस्ताक्षर"

File Provided by GKPAD.COM

- यह कविता बलिदान और शहादत की स्मृति को जीवंत करती है।
- स्वतंत्रता संग्राम में शहीदों ने अपने रक्त से इतिहास लिखा, इस तथ्य पर कवि का बल है।
- "खूनी हस्ताक्षर" रूपक शहीदों की अमर गाथा और राष्ट्रीय त्याग का प्रतीक है।

2. 'शहीदों में तू नाम लिखा ले रे"
    - यह प्रेरणात्मक गीत युवाओं को संबोधित है कि मातृभूमि के लिए त्याग करो और शहीदों में अपना नाम सम्मिलित करो।
    - यह केवल काव्य नहीं, बल्कि देश-भक्ति का प्रत्यक्ष घोष है।

विशेष मूल्यांकन:

व्यास जी ने हास्य और व्यंग्य के अतिरिक्त, राष्ट्रीय विषयों को गेय और प्रेरणात्मक रूप में प्रस्तुत किया। उनके इन गीतों ने देशवासियों को त्याग और बलिदान के लिए प्रेरित किया।

समकालीन राष्ट्रीय काव्य (प्रथम चरण) की विशेषताएँ

- इतिहास से प्रेरणा: महापुरुषों और अतीत के शौर्य का गान आधुनिक चेतना हेतु हुआ।
- बलिदान और शौर्य: चेतक, प्रताप, शहीद और तलवार—इन प्रतीकों का आधुनिक रूपांतरण।
- राष्ट्र-निर्माण की प्रेरणा: स्वतंत्रता उपरांत पीढ़ी को राष्ट्र के उत्थान हेतु सक्रिय करना।
- सरल और गेय भाषा: इन कविताओं की लोकप्रियता का कारण इनकी सहजता और गीतात्मक स्वरूप है।
- लोकप्रियता: विद्यालयों, राष्ट्रीय पर्वों और जनआंदोलनों में गाई जाने वाली कविताएँ।
- कर्तव्य और त्याग का आह्वान: वीरता के साथ-साथ कर्मयोग और सेवा चेतना मुख्य स्वर हैं।

File Provided by GKPAD.COM

तुलनात्मक दृष्टि

कवि	काव्य का रूप	राष्ट्रीय दृष्टि
श्याम नारायण पांडेय	ऐतिहासिक-वीर गाथाएँ	चेतक और प्रताप के माध्यम से बलिदान की प्रेरणा
द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी	राष्ट्रगीत-सरीखी प्रेरक कविताएँ	कर्तव्य, कर्मयोग और आगे बढ़ने की चेतना
गोपाल प्रसाद व्यास	ओजपूर्ण गीत और हास्य-व्यंग्य मिश्रित काव्य	शहीदों की स्मृति, बलिदान और राष्ट्रीय गौरव

मूल्यांकन

समकालीन राष्ट्रीय काव्य के प्रथम चरण में कवियों ने न केवल स्वतंत्रता-संग्राम की स्मृति को जीवित रखा, बल्कि स्वतंत्र भारत को नई दिशा प्रदान करने लायक चेतना भी दी।

- श्याम नारायण पांडेय: ऐतिहासिक महाकाव्यों से वीरता की प्रेरणा दी।
- द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी: गीतात्मक काव्य से नवयुवकों और राष्ट्रनिर्माताओं को कर्तव्य की ओर उन्मुख किया।
- गोपाल प्रसाद व्यास: अपनी सहज-अनुभावपूर्ण शैली और हास्यात्मक ओज से युवाओं में शौर्य और बलिदान की चेतना जगाई।

निष्कर्ष

File Provided by GKPAD.COM

समकालीन राष्ट्रीय काव्य (प्रथम चरण) हिंदी साहित्य का वह महत्वपूर्ण अध्याय है जहाँ *इतिहास और वर्तमान* का अद्भुत संगम हुआ। एक ओर प्रताप और चेतक की स्मृतियाँ जीवित की गईं, दूसरी ओर नवनिर्माण और शहीदों की प्रेरणा को ध्वनित किया गया।

श्याम नारायण पांडेय, द्वारिका प्रसाद माहेश्वरी और गोपाल प्रसाद व्यास के काव्य ने स्वतंत्र भारत की पीढ़ी को यह संदेश दिया कि स्वतंत्रता केवल प्राप्त करना ही पर्याप्त नहीं है, बल्कि उसे बनाए रखना और उसके अनुरूप नवभारत का निर्माण करना भी उतना ही आवश्यक है।

Unit VII: समकालीन राष्ट्रीय काव्य – द्वितीय चरण

भूमिका

भारतीय स्वतंत्रता प्राप्ति (1947) के बाद साहित्य का स्वरूप बदलने लगा। जहाँ स्वतंत्रता से पहले की कविताएँ औपनिवेशिक सत्ता के खिलाफ युद्ध, बलिदान और शौर्य का सीधा उद्घोष करती थीं, वहीं स्वतंत्रता मिलने के बाद कवियों का ध्यान नवनिर्माण, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक उत्थान की ओर केंद्रित हुआ।

स्वतंत्र भारत के प्रारंभिक दशकों में राष्ट्रकाव्य का यह स्वरूप समकालीन राष्ट्रीय काव्य – द्वितीय चरण के रूप में देखा जाता है। इस चरण में कविताओं का मुख्य उद्देश्य था—

- स्वतंत्रता आंदोलन की याद दिलाना,
- देशवासियों को राष्ट्रीय आदर्शों के संरक्षण हेतु प्रेरित करना,
- लोकतंत्र और एकता की रक्षा के लिए जागरूक करना।

इस काल के दो प्रमुख कवि हैं: सोहनलाल द्विवेदी और अटलबिहारी वाजपेयी। ये दोनों कवि स्वतंत्रता-उत्तर भारतीय कविता को दिशा देने वाले राष्ट्रीय चेतना के वाहक बने।

सोहनलाल द्विवेदी (1906–1988)

File Provided by GKPAD.COM

जीवन परिचय

- जन्म: 22 फरवरी 1906, फतेहपुर (उत्तर प्रदेश)
- निधन: 1 फरवरी 1988
- विशेषता: महात्मा गांधी से गहरा जुड़ाव। उनकी कविताओं में अहिंसा, सेवा और कर्मयोग का महत्व।
- शिक्षा-दीक्षा में साहित्य और राष्ट्रीय सेवा दोनों का समन्वय।
- गांधीजी ने स्वयं सोहनलाल द्विवेदी को 'राष्ट्रकवि" कहकर संबोधित किया था।

साहित्यिक योगदान

- कविता संग्रह: *नव राष्ट्र, शहीदों की चिताएँ, अर्घ्य, ओझल पुरवा*
- लेखन का स्वर: गीतात्मक, सरल, प्रेरणात्मक और राष्ट्रीय चेतना से परिपूर्ण।
- द्विवेदी जी की कविताएँ राष्ट्रीय पर्वों, विद्यालयों और सांस्कृतिक आयोजनों में गाए जाने वाले गीत बन गए।

राष्ट्रीय चेतना

- द्विवेदी जी ने *सत्य, अहिंसा और त्याग* को राष्ट्रीय आदर्श माना।
- वे मानते थे कि स्वतंत्रता केवल बलिदान से प्राप्त नहीं होती, बल्कि उसे बनाए रखने के लिए सतत कर्म और त्याग आवश्यक है।
- उनकी कविताओं का मुख्य स्वर है— *जनता को जाग्रत करना और मातृभूमि के लिए निष्ठावान बनाना।*

निर्दिष्ट रचनाओं का विश्लेषण

1. 'मातृभूमि"
    - इस कविता में मातृभूमि को माता का स्वरूप मानकर उसकी महिमा गाई गई है।

File Provided by GKPAD.COM

- कवि कहता है कि मातृभूमि हमारी जीवन-आधार है, इसके बिना मानव व्यर्थ है।
- इसमें त्याग और समर्पण की प्रेरणा है—मातृभूमि की रक्षा करना प्रत्येक नागरिक का सर्वोच्च कर्तव्य है।
- कविता भावनात्मक और राष्ट्रप्रेरक दोनों दृष्टियों से महत्वपूर्ण है।

2. 'तुम्हें नमन (चल पड़े जिधर दो डग मग में)"
    - यह कविता स्वतंत्रता संग्राम के शहीदों और कर्मवीरों को नमन करती है।
    - "चल पड़े जिधर दो डग मग में" – इस पंक्ति में नायकत्व का आह्वान है।
    - कवि कहता है कि कुछ महापुरुष अपने साहस और मार्गदर्शन से समाज को नई दिशा देते हैं। हमें उन्हें नमन करना चाहिए।
    - यहाँ राष्ट्र के लिए कार्य करने वाले वीरों के प्रति आदर और प्रेरणा व्यक्त की गई है।

विशेष मूल्यांकन:

सोहनलाल द्विवेदी का काव्य राष्ट्रीय चेतना का नैतिक और आध्यात्मिक आधार है। वे गांधीवादी दृष्टिकोण से प्रेरित होकर एक शांतिपूर्ण, एकात्म और करुणापूर्ण 'नवभारत" का स्वप्न प्रस्तुत करते हैं।

अटल बिहारी वाजपेयी (1924–2018)

जीवन परिचय

- जन्म: 25 दिसंबर 1924, ग्वालियर (म.प्र.)
- निधन: 16 अगस्त 2018, दिल्ली
- विशिष्ट पहचान: कवि, स्वतंत्रता सेनानी, पत्रकार, और बाद में भारत के प्रधानमंत्री।

File Provided by GKPAD.COM

- किशोरावस्था में ही राष्ट्रीय आंदोलन से जुड़ गए और कई बार जेल गए।
- साहित्यिक व्यक्तित्व: आधुनिक हिंदी के ऐसे कवि जिनकी कविताओं में देशभक्ति, संवेदना और व्यक्तिगत संघर्ष का अद्भुत संगम है।

साहित्यिक योगदान

- काव्य संग्रह: *मरुथल का सरगम, अमर बलिदान, नई चुनौतियाँ, चौदहवीं लोकसभा कविता संग्रह*
- कवि वाजपेयी की शैली: राष्ट्रप्रेम के साथ ही भावात्मक गहनता, भाषा में सरलता और गीतात्मकता।

राष्ट्रीय चेतना

- वाजपेयी जी की कविताओं में स्वतंत्रता आंदोलन की अनुभूतियाँ भी हैं और स्वतंत्र भारत की चुनौतियाँ भी।
- उनकी कविताएँ केवल शौर्य और बलिदान का गीत नहीं हैं, बल्कि *रचनात्मक दृष्टिकोण* से नए भारत के निर्माण का घोष हैं।
- उनमें *समर्पण, कर्तव्य, संघर्ष और एकता* की गहन चेतना मिलती है।

निर्दिष्ट रचनाओं का विश्लेषण

1. ‘कदम मिलाकर चलना होगा”
   - यह कविता स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद की है। इसमें कवि का संदेश है कि यदि हमें राष्ट्र को मजबूत बनाना है तो हमें कदम से कदम मिलाकर चलना होगा।
     - कविता में एकता और संगठन का स्वर है।
     - कवि चेतावनी भी देता है कि यदि विभाजन और डर में बिखरेंगे तो स्वतंत्रता अर्थहीन हो जाएगी।
     - इसमें *आधुनिक राष्ट्रीय एकता का उद्घोष* है।

File Provided by GKPAD.COM

2. ‘उनकी याद करें”

- यह कविता स्वतंत्रता संग्राम में बलिदान देने वालों की स्मृति में है।
- कवि कहता है कि हमें उन शहीदों को स्मरण करना चाहिए जिन्होंने अपना सर्वस्व राष्ट्र के लिए अर्पित कर दिया।
- इस स्मरण से नई पीढ़ी कर्तव्य और बलिदान का सबक लेगी।
- कविता शोक नहीं, बल्कि बलिदान की गरिमा का गौरव बखानती है।

विशेष मूल्यांकन:

वाजपेयी का राष्ट्रीय काव्य स्वतंत्रता उपरांत भारत के यथार्थ से सीधे जुड़ता है। वे केवल स्वराज्य नहीं, बल्कि उसके परिणामस्वरूप *सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मजबूती* का संदेश देते हैं।

समकालीन राष्ट्रीय काव्य – द्वितीय चरण की विशेषताएँ

- स्वतंत्रता का उत्सव और स्मृति: यहाँ कविताएँ शहीदों की याद और स्वतंत्रता प्राप्ति की गौरवगाथा कहती हैं।
- नवनिर्माण का संकल्प: स्वतंत्र भारत को सशक्त और संगठित बनाने का संदेश।
- एकता और संगठन: कविताएँ लोगों से सामाजिक और राजनीतिक स्तर पर कदम से कदम मिलाकर चलने की अपील करती हैं।
- गांधीवादी और आधुनिक स्वर: द्विवेदी जी में गांधीवादी आदर्श, तो वाजपेयी में आधुनिक राष्ट्र-निर्माण दोनों दृष्टियाँ हैं।
- सरल भाषा और गीतात्मकता: दोनों कवियों की कविताएँ जनता के बीच गीतों की तरह लोकप्रिय हो गईं।

तुलनात्मक दृष्टि

File Provided by GKPAD.COM

कवि	काव्य स्वरूप	राष्ट्रीय मूल्य
सोहनलाल द्विवेदी	गांधीवादी प्रेरणारित गीत	अहिंसा, कर्मयोग, बलिदान और मातृभूमि प्रेम
अटलबिहारी वाजपेयी	स्वतंत्रता-उत्तर नवनिर्माण का घोष	संगठन, एकता, शहीदों का स्मरण और भविष्य दृष्टि

मूल्यांकन

- सोहनलाल द्विवेदी ने अपने गीतों से स्वतंत्रता उपरांत भारत में राष्ट्रभक्ति की लौ प्रज्वलित रखी। उनके गीतों ने नागरिकों को कर्म और सेवा में प्रवृत्त होने की प्रेरणा दी। वे गांधीवादी आदर्शों को राष्ट्रीय काव्य में मूर्त रूप देने वाले कवि हैं।
- अटल बिहारी वाजपेयी ने राष्ट्रकाव्य को आधुनिक अभिव्यक्ति दी। उन्होंने स्वतंत्र भारत की समस्याओं और संभावनाओं को गीतों में ढालकर सांस्कृतिक चेतना का आह्वान किया।

निष्कर्ष

समकालीन राष्ट्रीय काव्य (द्वितीय चरण) हिंदी साहित्य का एक महत्वपूर्ण अध्याय है जिसमें स्वतंत्र भारत की भावनाएँ, स्मृतियाँ और संकल्प स्पष्ट रूप से व्यक्त हुए।

सोहनलाल द्विवेदी ने शहीदों का स्मरण और मातृभूमि के प्रति निष्ठा का भाव व्यक्त किया, वहीं अटल बिहारी वाजपेयी ने इस राष्ट्र को भविष्य की ओर बढ़ाने, संगठन और नवनिर्माण का संकल्प व्यक्त किया।

यह चरण राष्ट्रीय काव्य को केवल स्वतंत्रता संग्राम की स्मृतियों तक नहीं बाँधता, बल्कि *आधुनिक भारत के निर्माण* का घोष बनकर सामने आता है।

File Provided by GKPAD.COM

Unit VIII: हिंदी फिल्मी गीतों में राष्ट्रीय काव्य

भूमिका

हिंदी सिनेमा भारतीय समाज का दर्पण रहा है और इसके गीत जन-जन की धड़कन। स्वतंत्रता संग्राम के समय से लेकर आधुनिक भारत तक, हिंदी फिल्मी गीतों ने राष्ट्रीय चेतना को जगाने, उसे बनाए रखने और समय के साथ उसे नई परिभाषा देने में एक अतुलनीय भूमिका निभाई है। जहाँ साहित्यिक कविताएँ एक सीमित वर्ग तक पहुँच पाती थीं, वहीं फिल्मी गीतों ने अपनी सरलता, भावनात्मकता और संगीत के माध्यम से देश के हर कोने में राष्ट्रप्रेम का संदेश पहुँचाया।

यह इकाई उन महत्वपूर्ण गीतकारों और उनके गीतों का अध्ययन करती है जिन्होंने राष्ट्रभक्ति को लोकप्रिय संस्कृति का हिस्सा बना दिया। इन गीतों ने स्वतंत्रता के लिए संघर्ष, नवनिर्माण के संकल्प, युद्ध के समय शौर्य, सांस्कृतिक गौरव और आधुनिक चुनौतियों से लड़ने की प्रेरणा दी है। यह केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि भारतीय राष्ट्रवाद के विकास का एक संगीतमय इतिहास है।

कवि प्रदीप (1915–1998)

कवि प्रदीप को हिंदी सिनेमा का सबसे प्रखर राष्ट्रीय कवि माना जाता है। उनके गीत सीधे, सरल और अत्यंत भावुक होते थे, जो सीधे हृदय को छूते थे।

- आज हिमालय की चोटी से फिर हमने ललकारा है (किस्मत – 1943): यह गीत स्वतंत्रता से पूर्व का है और इसमें औपनिवेशिक शासन के खिलाफ एक प्रखर चुनौती है। "दूर हटो ऐ दुनिया वालो, हिंदुस्तान हमारा है" का नारा देकर यह गीत ब्रिटिश सत्ता को सीधे ललकारता है। यह गीत उस दौर के साहस और स्वतंत्रता की तीव्र आकांक्षा का प्रतीक है।
- ऐ मेरे वतन के लोगों (ग़ैर फिल्मी – 1963): यह गीत 1962 के भारत-चीन युद्ध के शहीदों की स्मृति में लिखा गया था। लता मंगेशकर द्वारा गाए गए इस गीत ने

File Provided by GKPAD.COM

तत्कालीन प्रधानमंत्री जवाहरलाल नेहरू सहित पूरे देश को भावुक कर दिया था। यह गीत बलिदान की पराकाष्ठा और शहीदों के प्रति कृतज्ञता का सबसे मार्मिक दस्तावेज़ है। यह हमें याद दिलाता है कि स्वतंत्रता की रक्षा के लिए कितनी बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है।

- हम लाए हैं तूफ़ान से कश्ती निकाल के (जागृति – 1954): स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद लिखा गया यह गीत नवनिर्माण का संदेश देता है। यह कहता है कि हमने मुश्किलों से आज़ादी हासिल की है और अब इस देश को बच्चों को सँभालना है। यह गीत नई पीढ़ी को राष्ट्र निर्माण की ज़िम्मेदारी सौंपता है।
- आओ बच्चों तुम्हें दिखाएँ झाँकी हिंदुस्तान की (जागृति – 1954): यह गीत भारत की सांस्कृतिक, भौगोलिक और ऐतिहासिक विविधता में एकता का सुंदर चित्रण है। यह बच्चों को देश के विभिन्न हिस्सों—उत्तर में हिमालय, दक्षिण में सागर, पश्चिम में मरुस्थल और पूर्व में हरे-भरे मैदानों—की यात्रा कराता है और सिखाता है कि यह पूरा देश एक है। यह राष्ट्रीय एकता का एक संगीतमय पाठ है।

साहिर लुधियानवी (1921–1980)

साहिर एक प्रगतिशील शायर थे जिनकी रचनाओं में सामाजिक यथार्थ और मानवीय गरिमा का स्वर प्रमुख था।

- साथी हाथ बढ़ाना (नया दौर – 1957): यह गीत नेहरूवादी युग के सामूहिक राष्ट्र-निर्माण के आदर्श को दर्शाता है। यह मेहनत और एकता की शक्ति का गान है। गीत का संदेश है कि अकेले थक जाएँगे, लेकिन अगर सब मिलकर काम करें तो बड़ी से बड़ी मुश्किल को पार कर सकते हैं। यह स्वतंत्र भारत के नवनिर्माण में श्रम और सहयोग के महत्व को रेखांकित करता है।

प्रेम धवन (1923–2001)

प्रेम धवन के गीतों में आशावाद और भविष्य के प्रति एक सकारात्मक दृष्टि दिखती है।

- छोड़ो कल की बातें, कल की बात पुरानी (हम हिन्दुस्तानी – 1961): यह गीत अतीत की कड़वी यादों को भूलकर एक नए, आधुनिक और प्रगतिशील भारत के निर्माण का

File Provided by GKPAD.COM

आह्वान करता है। "नए दौर में लिखेंगे मिलकर नई कहानी" की पंक्ति भारत के सुनहरे भविष्य के प्रति आशा और विश्वास को दर्शाती है। यह गीत विकास और आधुनिकता के पथ पर आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।

नीरज (1925–2018)

गोपालदास नीरज अपनी रोमांटिक और दार्शनिक कविताओं के लिए जाने जाते हैं, लेकिन उनका राष्ट्रीय गीत भी अत्यंत मार्मिक है।

- ऐ मेरे प्यारे वतन (काबुलीवाला – 1961): यह गीत वतन से दूर रहने वाले एक व्यक्ति की अपने देश के प्रति गहरी याद और प्रेम को दर्शाता है। यह एक काबुलीवाले की आवाज़ है जो भारत में रहते हुए अपने वतन अफ़गानिस्तान को याद करता है। यह गीत राष्ट्रप्रेम की उस सार्वभौमिक भावना को पकड़ता है जो सीमाओं से परे है और हर उस व्यक्ति के दर्द को आवाज़ देता है जो अपनी मातृभूमि से दूर है।

कैफ़ी आज़मी (1919–2002)

कैफ़ी आज़मी भी एक प्रमुख प्रगतिशील शायर थे जिनके काव्य में क्रांति और सामाजिक न्याय का स्वर बुलंद था।

- कर चले हम फ़िदा जान-ओ-तन साथियों (हक़ीक़त – 1964): 1962 के युद्ध की पृष्ठभूमि पर बनी फिल्म 'हकीकत' का यह गीत बलिदान की सर्वोच्च भावना का प्रतीक है। यह एक मरते हुए सैनिक का अपने साथियों को संदेश है कि हमने अपना कर्तव्य निभा दिया, अब देश की रक्षा की ज़िम्मेदारी तुम्हारे हवाले है। "अब तुम्हारे हवाले वतन साथियों" पंक्ति हर पीढ़ी को राष्ट्रीय सुरक्षा की ज़िम्मेदारी का अहसास कराती है।

राजेंद्र कृष्ण (1919–1987)

राजेंद्र कृष्ण के गीतों में भारत के गौरवशाली अतीत और सांस्कृतिक समृद्धि का वर्णन मिलता है।

- जहाँ डाल-डाल पर सोने की चिड़िया (सिकंदर-ए-आज़म – 1965): यह गीत भारत के प्राचीन गौरव, सांस्कृतिक महानता और नैतिक मूल्यों का बखान करता है। यह उस

File Provided by GKPAD.COM

"स्वर्ण युग" की याद दिलाता है जब भारत ज्ञान, समृद्धि और शांति का केंद्र था। यह गीत भारतीयों में अपनी संस्कृति और इतिहास के प्रति गर्व की भावना जगाता है।

गुलशन बावरा (1937–2009)

गुलशन बावरा के गीतों में धरती और किसान से जुड़ाव स्पष्ट दिखता है।

- मेरे देश की धरती सोना उगले (उपकार – 1967): यह गीत 'जय जवान, जय किसान' के नारे को संगीतमय अभिव्यक्ति देता है। यह भारत की कृषि प्रधान अर्थव्यवस्था और किसानों के महत्व को रेखांकित करता है। गीत में देश की धरती को माँ का दर्जा दिया गया है जो सोना (अनाज) उगाती है। यह ग्रामीण भारत और किसानों के प्रति सम्मान का गीत है।

गुलज़ार (1934–वर्तमान)

गुलज़ार आधुनिक हिंदी सिनेमा के सबसे महत्वपूर्ण गीतकारों में से एक हैं, जिनकी कविता में गहराई और नवीनता होती है।

- ए वतन, मेरे वतन आबाद रहे तू (राजी – 2018): यह गीत राष्ट्रभक्ति की एक नई और जटिल परिभाषा प्रस्तुत करता है। यह एक जासूस महिला के दृष्टिकोण से लिखा गया है जो अपने देश के लिए अपनी पहचान, अपना परिवार और अपना प्रेम सब कुछ दाँव पर लगा देती है। यह गीत दिखाता है कि देशभक्ति केवल नारों या युद्ध के मैदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक खामोश, व्यक्तिगत और गहरा समर्पण भी हो सकता है।

इसरार अंसारी

इसरार अंसारी ने आधुनिक समय की चुनौतियों को अपने गीतों में ढाला।

- ज़िंदगी मौत न बन जाए, संभालो यारो (सरफ़रोश – 1999): यह गीत 90 के दशक के अंत में आतंकवाद और सीमा पार से होने वाली साजिशों के खिलाफ एक चेतावनी है। यह नागरिकों से जागृत रहने और देश के दुश्मनों से सावधान रहने का आह्वान करता है। यह गीत राष्ट्रवाद के उस पहलू को दर्शाता है जहाँ देश की आंतरिक और बाह्य सुरक्षा सर्वोपरि है।

File Provided by GKPAD.COM

निष्कर्ष

हिंदी फिल्मी गीतों ने राष्ट्रीय काव्य को एक नया आयाम दिया है। कवि प्रदीप के सीधे आह्वान से लेकर गुलज़ार की nuanced देशभक्ति तक, इन गीतों ने समय के साथ बदलती राष्ट्रीय चेतना को दर्ज किया है। ये गीत केवल फिल्में का हिस्सा नहीं, बल्कि भारत की सांस्कृतिक धरोहर हैं। इन्होंने करोड़ों भारतीयों के मन में देशप्रेम, एकता और बलिदान की भावना को सींचा है और आज भी राष्ट्रीय पर्वों और महत्वपूर्ण अवसरों पर ये गीत पूरे देश को एक सूत्र में पिरोते हैं। ये गीत इस बात का प्रमाण हैं कि कला और संगीत किस प्रकार राष्ट्र निर्माण एक शक्तिशाली औज़ार बन सकते हैं।

GKPAD.COM